One Day Interdisciplinary International Seminar

On

Reflection of Education In Literature

साहित्यातील शिक्षणाचे प्रतिबिंब

Friday, 1 March, 2019

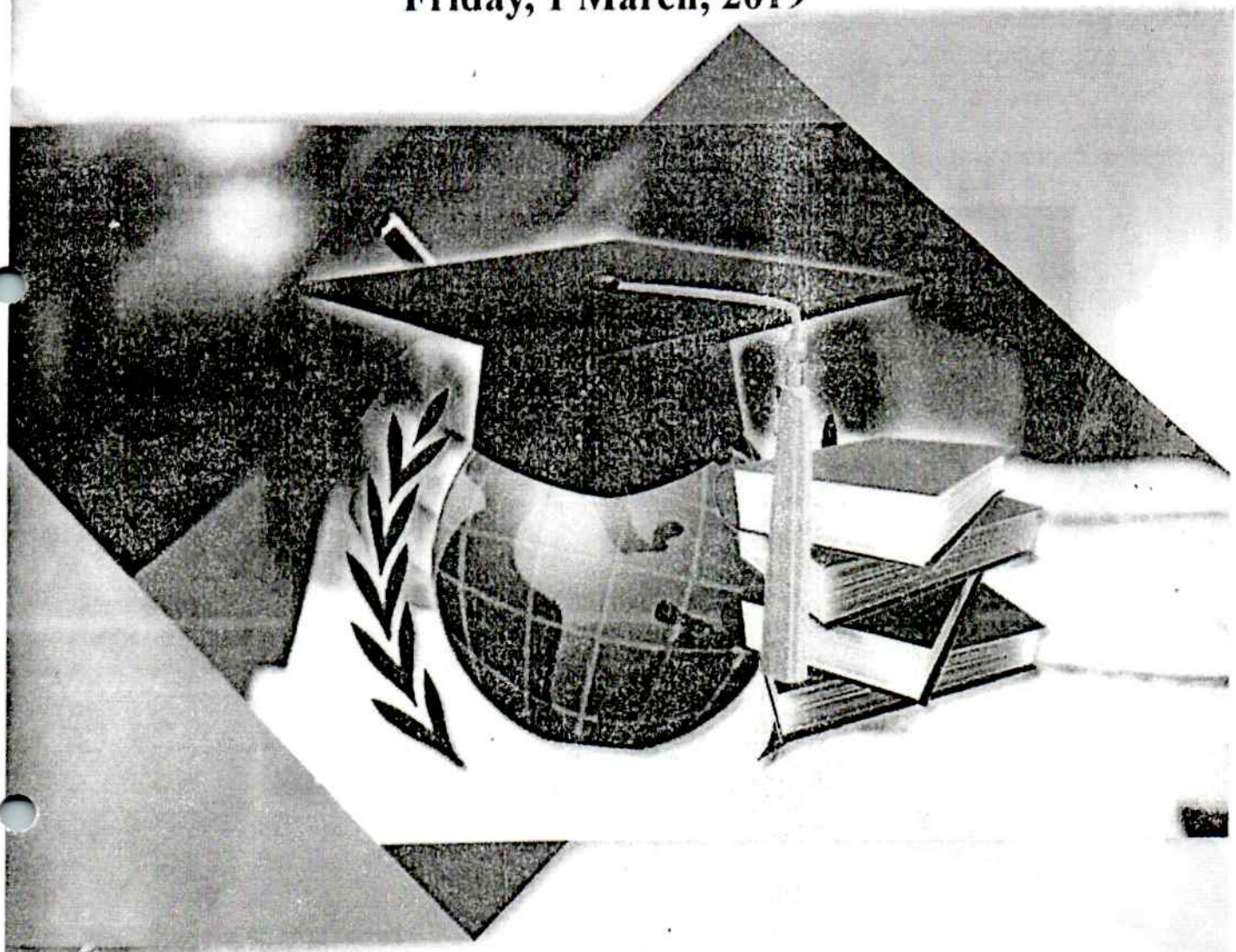

organise by

॥ सा विद्या या विमुक्तये ॥

Balasaheb Mane Education Trust's

RAJARSHI SHAHU ARTS & COMMERCE COLLEGE, RUKADI

Tal. Hatkanangale, Dist. Kolhapur-416 118, Marashtra (India)

E-Mail : rajshahurkd@yahoo.com

Website : www.rajshasuruk.in Phone No. : 0230-2586003

Sr. No.	Title	Author	Page No.
101	साहित्याची स्त्रीवादी समीक्षा	कु.दिव्यांजलीकुमार माने डॉ. सी.पी.सोनकांबळे	302
102	काटेमुंढरीची शाळा : आदिवासी जीवनाचा डोळस समूहशोध	डॉ.प्रभाकर रामचंद्र पवार	306
103	शंकर पाटलांच्या कथेतील 'शाळा'	प्रा. डॉ. माधवी खरात	309
104	गुरुदेव रवींद्रनाथ टागोर यांचे शैक्षणिक तत्त्वज्ञान	विजया प्रशांत पवार	312
105	मराठी कवितेतील शिक्षणव्यवस्थेचे चित्रण	डॉ. कल्याणी शेजवळ.	315
106	शिक्षण माणसाला सर्वार्थाने संपृक्त बनवते	डॉ. प्रशांत नागावकर	318
107	दलित, वंचित, आदिवासी, भटके-विमुक्त अल्पसंख्याक यांच्या शिक्षणामुळे मराठी साहित्यात उमटलेला आवाज	डॉ. सयाजीराव छबुराव गायकवाड	321
	HINDI SECTION		
108	हिंदी साहित्य में चित्रित शिक्षा क्षेत्र में शोषण, उत्पीडन, भ्रष्ट व्यवस्था तथा अनैतिकता	डॉ. बलवंत जेऊरकर	324
109	एक और द्रोणाचार्य में शिक्षण व्यवस्था की कुरूपता	डा. नागरत्ना के	327
110	'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में चित्रित शिक्षा की दशा एवं दिशा	श्री. अनिल सदाशिव करेकांबळे प्रा. डी. एस. घुटुकडे	330
111	'जूठन' में प्रतिबिंबित शिक्षा और वर्तमान	डॉ. सविता चोखोबा किर्ते	333
112	'नभग' खंडकाव्य में समाज परिवर्तनकारी शिक्षाप्रणाली	प्रा. एस्. आर. दळवी	336
113	हिंदी साहित्य में चित्रित धर्म और शिक्षा के अतः संबन्ध	डॉ.संतोष बबनराव माने	339
114	''शिक्षा पर हावी होती राजनीति : 'एक और द्रोणाचार्य' के विशेष संदर्भ में''	प्रा. शैलजा पांडुरंग टिळे	341
115	हिन्दी उपन्यासों में चित्रित शिक्षा के द्वारा महिला सुधार-मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में	डॉ. शाहीन एजाज जमादार	344
116	शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन के बदलते आयाम (हिंदी कथासाहित्य के विशेष संदर्भ में)	प्रा.सौ.स्नेहलता सदाशिव पुजारी	347
117	हिंदी साहित्य में चित्रित शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार (देवेश ठाकुर जी के 'गुरूकुल' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले	350
118	शिक्षा व्यवस्था के भ्रष्टता का शिकार समर्पित जीवन	शंकर दत्तात्रय कोळगिरे	352
119	हिंदी महिला आत्मकथाओं में चित्रीत नारी शिक्षा	प्रा. माधुरी शिवाजीराव पाटील	354
120	''ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में शिक्षा से प्राप्त आत्माभिमान''	प्रा.सुनंदा मोहिते	356
121	'पहला गिरमिटिया' में शिक्षा से निर्मित मानवी मूल्य	प्रा. डॉ. आर. बी. भुयेकर	358
122	शिक्षा के द्वारा हुआ महिला सुधार एवं सशक्तिकरण (हिंदी उपन्यासों के संदर्भ में)	डॉ.कल्पना किरण पाटोळे	360
123	हिंदी कथा साहित्य में प्रतिबिंबित शैक्षिक प्रशासन व्यवस्था	डॉ. शोभा माणिक पवार	362
124	शिक्षा से प्रभावित सामाजिक आंदोलन और हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य	डॉ.साताप्पा शामराव सावंत.	364
125	"हिंदी साहित्य में शिक्षा से प्रभावित पारिवारिक रिश्ते-नाते" (ममता कालिया के 'दौड़' उपन्यास के संदर्भ में)	सुश्री रूपाली संभाजी पाटील	368
126	'डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर के विचारों से प्रेरित शिक्षा' (आधुनिक हिंदी कविता के विशेष संदर्भ में)	सागर रघुनाथ कांबळे	371

हिंदी साहित्य में चित्रित धर्म और शिक्षा के अत: संबन्ध

डॉ.संतोष बबनराव माने
शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज. ४१६५०२
जीला कोल्हापूर (महाराष्ट्र).
मो.९५५२०९३१७२

''हिंदी काव्य में महाराष्ट्री संत रचनाकारों का योगदान''

संसार में भारतीय साहित्य की युगधारा संपूर्ण मानव जाति के विकास के लिए प्रेरक रही है । इस भारतीय साहित्य की जीवन यात्रा संस्कृत भाषा से लेकर हिंदी भाषा तक देखने को मिलती है । जिसके बल पर भारतीय जाति के इतिहास के लगभग पाँच हजार साल का इतिहास हमें ज्ञात होता है । रामायण एवं हड़प्पाकालीन संस्कृति से आज तक का भारतीय साहित्य महान माना जाता है । जिसमें मानवी सभ्यता, आचार - विचार, रिति-रिवाज के साथ भारतीय संस्कृति का दर्शन हिंदी साहित्य में आरंभ से शिक्षा एंव धर्म संबंधी विचार प्रमुख रूप से रहे है ।

विविध जाती के साथ जुडे इस भारत देश के प्रति आस्था भी कम महत्वपूर्ण नहीं है । भारतीय समाज और इतिहास को जब हम सामने रखते है तब लगभग १२०० से उरप भाषा एवं बोलियाँ मानी जाती है । अनेक बोलियाँ एवं भाषाएँ होकर भी आज वर्तमान काल में हिंदी भाषा ने भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा होने का सम्मान प्राप्त किया है । और इसका कारण भारत की एकता, भारत की सभ्यता ही मानी जा सकती है । भारत देश विविध प्रांतो से जुडा है । यहाँ पर हिंदी प्रदेश और अहिंदी प्रदेश दोनों विद्यमान है । राष्ट्रगीत, राष्ट्रहित के साथ राष्ट्रभाषा को संपूर्ण भारतीय समाज ने अपनाया है । आज हिंदी साहित्यधारा महान मानी जाती है इसका कारण अहिंदी प्रदेश के कवि, संत, समाज इन्होंने अपने साहित्य के धर्म और शिक्षा को सुधारने का प्रयास किया है । हिंदी साहित्य में कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, रहीम बिहारी से लेकर प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, नागार्जुन, भीष्म साहनी आदि विव्दानों ने धर्म और शिक्षा को प्रभावित करके एकता बनाने का प्रयास किया है।

महाराष्ट्र एवं मराठी भाषा के महान संत भी है जिन्हाने हिंदी भाषा में काव्य लिखकर इस महान भाषा मे सामाजिक सुधार किये है । मराठी भाषा के प्रसिध्द संत नामदेव और संत तुकडोंजी का नाम हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण माना जाता है । महाराष्ट्र यह अहिंदी भाषी रहा है । महाराष्ट के संत नामदेव प्रमुख संत में से एक है । इनका जन्म सन १२६० में परभणी जीलें के नरसीबामणी गाँव में हुआ । इनके माता - पिता गोणाई और दामाशेठ थे । वे जाति से दर्जी (शिंपी) थे । इनकी पत्नी राणीबाई थी । नामदेव भगवान विठ्ठल के उपासक थे । हाथ में वीणा लेकर उन्होंने भजन किया । वारकरी संप्रदाय से जुडे नामदेव ने मराठी में ही काव्य नहीं लिखा बल्कि पंजाबी और हिंदी भाषा में भी काव्य लिखा । नामदेव ने परब्रह्म को व्यापक माना । नामदेव के अभंगो में ईश्वर स्तुति, आराधना, भक्ति महिमा और ब्रह्मानुभुति प्रमुख रही है । परब्रह्म की प्राप्ति सभी लोगों को होती है उसके लिए जाँती-पाँती, वर्ण-व्यवस्था-उँच-नीच कोई प्रश्न नहीं है । शिख संप्रदाय के पवित्र ग्रंथ 'गुरूग्रंथ साहब' में नामदेव के अनेक पद है । संत नामदेव ने अपने अभंग में लिखा है -

''सफल जनम मो को गुरू कीना ।
दुख बिसारि सुख अंतर लीना ।
ग्यान अंजन मोको गुरू दीना ।
राम नाम बिनु जीवन मनिहीना ।
नामदेव सुमिस कर जाना ।
जगजीवन सूँ जीव समाना ।।''

धर्म में सही शिक्षा होनी चाहिए । अतः यह विचार संत नामदेव के पदों में गुरू-स्तुति, ईश्वर-महिमा, समर्पण भावना मिलती है । नामदेव के पदों में सामाजिकों के प्रति आदर और समाज सेवा का चित्रण मिलता है । इनके अभंगो में मानव, समाज का उध्दार देखने को मिलता है । अधर्म से जुडे समाज को धर्म का मार्ग दिखाया है ।

परदारा परधन परनिंदा परपीडन,

EIIRJ ISSN- 2277-8721 Volume–VIII, Special Issue–I March 2019

सांडोनि भजन होते करा ।

मराठी या हिंदी के नामदेव के अभंग में मानव जाति को एकता में बाँधने का प्रयास हुआ है । इनके अभंगों में पूरे समाज की झलक मिलती है । इस महान संतके अभंग मराठी, हिंदी भाषा के साथ पंजाबी में प्रसिधद है । मनुष्य का देह दुर्लभ है । अपने देह को महत्त्व देकर अपना-अपना माननेवाले कौरवों का नाश ही हुआ । नामदेवने मानव देह को लेकर कहा है -

"काहे रे नर गरब करत है बिनसी जाई झूठी देही ।
मेरी मेरी कैरव करते दुर्योधन से भाई ।"

हिंदी साहित्य में जो भक्ति साहित्य है इसमें नामदेव का साहित्य भी महान है । हिंदी भाषा या हिंदी साहित्य में इस अहिंदी संत नामदेव का नाम भी सुवर्ण अक्षरों में देखा जा सकता है ।अशिक्षित लोगों को शिक्षित बनाने का यह प्रयास है । वे संत उस दौर में समाज के अध्यापक रहे हैं ।

संत नामदेव की तरह महाराष्ट्र के मराठी संत तुकडोजी का साहित्य भी हिंदी साहित्य में आदर्श रहा है । तुकडोजी को महाराष्ट्र संत नहीं बल्कि राष्ट्रसंत के रूप में माना जाता है । उनका जनम अमरावती जिले के यावली नामक ग्राम में ३० एप्रिल १९०९ में हुआ । इनके माता - पिता मंजुळादेवी और बंडोजी थे । संत नामदेव की तरह वे भी वारकरी संप्रदाय से जुड़े भगवान विठ्ठल के उपासक थे । इनकी तुलना समर्थ रामदास स्वामी से लेकर स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरूषों से की जाती है । इन्होंने अपना जीवन ग्राम सुधार के लिए अर्पित किया । भजनों तथा स्वरचित गीतों द्वारा शिक्षा का महत्त्व, सामाजिक प्रबोधन 'ग्राम-गीता' जैसे ग्रंथो में देखने को मिलता है । हिंदी साहित्य को विकसित करने का श्रेय आधुनिक काल के तुकडोजी महाराज को भी मिलता है । ग्राम-गीता, गांधी गीतांजलि, लहर की बरखा तथा राष्ट्रीय भजनावली जैसे अनेक ग्रंथ हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं । ग्राम-गीता में वे लिखते हैं-

"हम भारत की शान है, वीरों की संतान है,
बढ़ो जवानों, लड़ो शत्रु से, चाहे हो बलिदान है ।"

इन पंक्तियों में राष्ट्रभक्ति तुकडोजी की देखने को मिलते हैं । स्वातंत्र्यपूर्व काल में देश की आझादी को लेकर इन्होंने मानव में देशभक्ति जगाने का प्रयास किया । राष्ट्रीय एकात्मता को बनाने के लिए तुकडोजी के विचार भारतीय शिक्षा व्यवस्था और धर्म व्यवस्था को सुधारक रहे हैं ।

हिंदी साहित्य में तुकडोजी की काव्य धारा श्रेष्ठ रही है । संपूर्ण भारतीय समाज को एकसुत्र में बाँधने का प्रयास इस महान संत का रहा है । 'राष्ट्रीय भजनावली' इस ग्रंथ में लिखा है -

"जात-पाँत को दूर हटावो, हम इन्सान यही बोलो ।
आज तलक के कष्ट किया था, अब अपना पढना खोलो ।
गाँव को अपने स्वर्ग,बनाओ, ना किसको दुख-दर्द रहे,
राष्ट्र के रंग में सभी जन, सच्चाई का व्यवहार रहे ।"

इन्होंने जाँत-पाँत को खत्म करने का प्रयास किया साथ ही गाँवों को सुधारने का प्रयास किया । समाज सुधारक विचार इनके काव्य के मुख्य बिंदु है जिसमें मानवता को महत्त्व है । स्वातंत्र्यपूर्व काल की सामाजिक समस्या, राष्ट्रीय समस्या को महत्त्व देकर तुकडोजी अपने साहित्य के माध्यम से समाजहित का धर्म और शिक्षा को महत्त्व देते है ।

आज हिंदी साहित्य का महत्त्व सिर्फ भारतीय समाज के लिए ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए बन चुका है । हिंदी भाषा और उसका साहित्य मानव जाति के लिए आदर्श बन चुका है । संत नामदेव और तुकडोजी महाराज अहिंदी भाषिक होकर भी साहित्य के विकास में अनमोल माने जाते हैं । इनके साहित्य में धर्म और शिक्षा के संबंध प्रकट हुए हैं तो आज भारतीय एकता को बढ़ावा देते है ।